Krishi Kumbh
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769
कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका
खण्ड 04 भाग 01, (जुन, 2024)
पृष्ठ संख्या 71–72

धान फसल का नर्सरी प्रबन्धन

शेर सिंह[1] उमेश कुमार[2] एवं एल.सी.वर्मा[3]
[1]वि.व.वि.– सस्यविज्ञान,
[2]वि.व.वि.– कृषि वानिकी,
[3]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष,
कृषि विज्ञान केंद्र, लेदौरा, आजमगढ़–II, उत्तरप्रदेश, भारत।
Email Id: –uk27396@gmail.com

खरीफ में धान की फसल का विशेष महत्व है। इसका खाद सुरक्षा में सर्वोपरी स्थान है। अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए स्वस्थ एवं निरोगी पौध तैयार करना अति आवश्यक होता है। धान की ज्यादा पैदावार लेने के लिए बहुत से कारक उत्तरदायी हैं, जिनमें से अच्छे बीज का चुनाव, नर्सरी में पौध की देख रेख, पोषक तत्व प्रबंधन, पानी की उपलब्धता खास हैं। स्वस्थ व निरोगी पौध तैयार करने के लिए यह जरूरी है कि अनुकूलतम आयु की पौध की रोपाई की जाये इससे धान की फसल से भरपूर पैदावार मिल सकती है। आमतौर पर संकर धान की नर्सरी 21 दिनों व दूसरी प्रजातियों की नर्सरी 25 दिनों में तैयार हो जाती है। तैयार नर्सरी की रोपाई यदि एक सप्ताह के अन्दर हो जाये तो पौधों में कल्लों की संख्या अधिक निकलती हैं। जो पैदावार बढाने में सहायक होती है।

खेत का चयनः

धान की पौध ऐसे खेत में डालना चाहिए जो कि सिंचाई के स्रोत के पास हो। धान की खेती के लिए पानी रोकने की क्षमता रखने वाली चिकनी या मटियार मिट्टी वाले क्षेत्र अधिक उपयुक्त रहते हैं। पर्याप्त सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर धान हल्की भूमि में भी सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है।

खेत की तैयारीः

किसानों को चाहिए कि खाली पड़े खेत की दो–तीन बार गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ दें, ताकि मिट्टी में मौजूद कीट, रोग व खरपतवार के अवशेष नष्ट हो जाएं, ततपश्चात गोबर की खाद या कम्पोस्ट खेत में भली भांति मिलाएं। पौध तैयार करने के लिए खेत में 2–3 सेमी0 पानी भरकर 2–3 बार जुताई करें। ताकि मिट्टी लेह युक्त हो जाए तथा खरपतवार नष्ट हो जाए। आखिरी जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को समतल करें। ताकि खेत में अच्छी तरह लेह बन जाए, जो कि पौध की रोपाई के

लिए उखाड़ने में मदद मिले तथा जड़ों का नुकसान कम हो।

नर्सरी के लिए खाद एवं उर्वरक:

पौध तैयार करने के लिए 1.25 मीटर चौड़ी व 8.0 मीटर लम्बी क्यारियां बना लें तथा प्रति क्यारी (10 वर्गमीटर) 225 ग्राम यूरिया, 400 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 65–70 ग्राम पोटाश मिलायें। यह ध्यान रहे कि पौध जितनी स्वस्थ होगी उतनी ही अच्छी उपज मिलेगी।

बुवाई का समय:

धान की नर्सरी के लिए 20 जून तक का समय उपयुक्त रहता है, इसलिए समुचित प्रजाति का चयन कर बोवाई सुनिचित करें। सुगन्धित प्रजातियों की नर्सरी जून के तीसरे सप्ताह में डालें।

बीज की मात्रा:

एक एकड़ क्षेत्रफल की रोपाई के लिए धान की महीन चावल वाली किस्मों का 12 किलोग्राम, मध्य दाने वाली किस्मों का 14 किलोग्राम और मोटे दाने वाली किस्मों का 16 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। जबकि संकर प्रजातियों के लिए प्रति एकड़ 7–8 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

बीज सोधन:

नर्सरी की बुवाई से पहले बीज का सोधन करना आवश्यक है। जीवाणु झुलसा की समस्या वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम बीज को 4 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन दवा में मिला कर रातभर पानी में भिगोयें। दूसरे दिन बीज को छाया में सुखा कर नर्सरी डालें। जहाँ इस रोग की समस्या ना हो उस क्षेत्र में बीज को 12 घण्टे तक पानी में भिगोयें तथा पौधशाला में बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम या थीरम की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें और उसके बाद बीज कों समतल छायादार स्थान पर फैला दें तथा भीगे जूट की बोरियों से ढक दें। बोरियों के ऊपर पानी का छिड़काव करें जिससे नमी बनी रहे। 24 घण्टे के बाद बीज अंकुरित हो जाएगा फिर अंकुरित बीज को समान रुप से बुवाई कर दें। ध्यान रखे कि बीज की बोवाई शाम को करें ताकि यदि तापमान अधिक हो तो अंकुरण नष्ट न होने पाये।

नर्सरी की देखरेख:

अंकुरित बीज की बुवाई के दो – तीन दिनों के बाद पौधशाला में सिचाई करें। खैरा रोग से बचाव के लिए एक सुरक्षात्मक छिड़काव 500 ग्राम जिंक सल्फेट को 2 किलोग्राम यूरिया या 250 ग्राम बुझे हुए चूने के साथ 100 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल की दर से पहला छिड़काव बुबाई के 10 दिन बाद एवं दूसरा छिड़काव 20 दिन बाद करना चाहिए। सफेदा रोग के नियंत्रण के लिए 400 ग्राम फेरस सल्फेट को 2 किलोग्राम यूरिया के साथ 100 लीटर पानी में घोल बना कर 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में छिड़काव करें।